दिल से .....

दौलतराम सहगल
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की

मैं झुकता हूं, क्योंकि मुझे रिश्ते निभाने का शौक है वरना
गलत तो हम कल भी नहीं थे और आज भी नहीं हैं

मैं अपने गम में रहता हूं, नवाबों की तरह।
परायी खुशियों के पास जाना मेरी आदत नहीं।

सबको हंसता ही देखना चाहता हूं मैं
किसी को धोखे से भी रूलाना मेरी आदत नहीं....।

बांटना चाहता हूं, तो बस प्यार और मोहब्बत
यूं नफरत फैलाना मेरी आदत नहीं....।।

जिंदगी मिट जाए, किसी के खातिर गम नहीं,
कोई बददुआ दे मरने की, यूं जीना मेरी आदत नहीं.....।

दोस्ती होती है, दिलों से चाहने पर
जबरदस्ती दोस्ती करना, मेरी आदत नहीं

नाम छोटा है, मगर दिल बड़ा रखता हूं,
पैसे से उतना अमीर नहीं हूं, मगर,
अपने यारों के गम खरीदने की हैसियत रखता हूं।

हिन्दी हमारी मातृभाषा है; मात्र एक भाषा नहीं.